http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 12, 78-79

Article ID:533

कृषि आधारित मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण मॉडल

सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल[1*], आशुतोष कुमार[2], मंजू कुमारी[3], मंजुल जैन[4]

[1]कृषि प्रसार एवं संप्रेषण विभाग, सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश- 211007

[2]एसएमएस, बागवानी सब्जियां केवीके नरकटियागंज, आरपीसीएयू, पूसा बिहार

[3]एसएमएस, बागवानी विभाग, केवीके, किशनगंज, बीएयू, पूसा बिहार

[4]सहायक प्रोफेसर, कृषि विद्यालय, एकलव्य विश्वविद्यालय (मध्य प्रदेश)

[*]अनुरूपी लेखक

सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल[*]

कृषि आधारित मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण मॉडल किसानों की आय में वृद्धि, कृषि उत्पादों की गुणवत्ता सुधार तथा फसलोपरांत हानियों को कम करने का एक प्रभावी और टिकाऊ उपाय है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, जहाँ विशाल मात्रा में कच्चा कृषि उत्पादन होता है, वहाँ प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन की अपर्याप्त सुविधाओं के कारण किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता। कृषि आधारित मूल्य संवर्धन न केवल कृषि उत्पादों के आर्थिक मूल्य को बढ़ाता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, उद्यमिता विकास और निर्यात संभावनाओं को भी प्रोत्साहित करता है। यह लेख कृषि आधारित मूल्य संवर्धन की अवधारणा, प्रमुख प्रसंस्करण मॉडल, उनके लाभ, चुनौतियाँ, सरकारी पहल तथा भविष्य की संभावनाओं पर विस्तृत प्रकाश डालता है।

1. परिचय

भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का आधार है, जिसमें लगभग आधी से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न है। पारंपरिक कृषि प्रणाली में किसानों का ध्यान मुख्यतः उत्पादन तक सीमित रहता है, जबकि फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान, मूल्य गिरावट तथा विपणन समस्याएँ किसानों की आय को प्रभावित करती हैं। कृषि आधारित मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण कृषि को लाभकारी व्यवसाय में परिवर्तित करने का एक सशक्त माध्यम है। यह न केवल कृषि उत्पादों के मूल्य को बढ़ाता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक विकास, महिला सशक्तिकरण और स्वरोजगार के अवसर भी प्रदान करता है।

2. कृषि आधारित मूल्य संवर्धन की अवधारणा

मूल्य संवर्धन वह प्रक्रिया है जिसमें कच्चे कृषि उत्पादों को प्रसंस्करण, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और भंडारण के माध्यम से उपभोक्ता की आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है, जिससे उनका बाजार मूल्य बढ़ जाता है।

उदाहरण

- ✓ गेहूँ → आटा, सूजी, ब्रेड, बिस्किट
- ✓ धान → चावल, चावल का आटा, फ्लेक्स
- ✓ टमाटर → सॉस, केचप, प्यूरी
- ✓ दूध → दही, पनीर, घी, आइसक्रीम
- ✓ फल → जैम, जेली, जूस, ड्राय फ्रूट
- ✓ सब्जियाँ → अचार, निर्जलित सब्जियाँ

इस प्रक्रिया से उत्पाद की शेल्फ लाइफ, गुणवत्ता, पोषण मूल्य तथा उपभोक्ता स्वीकार्यता में वृद्धि होती है।

3. कृषि आधारित प्रसंस्करण मॉडल

3.1 प्राथमिक प्रसंस्करण मॉडल

इस मॉडल में कृषि उत्पादों की मूलभूत प्रोसेसिंग की जाती है, जिससे उत्पाद बाजार के लिए उपयुक्त बन सके।

मुख्य गतिविधियाँ:

- ✓ सफाई एवं छंटाई
- ✓ ग्रेडिंग
- ✓ सुखाना
- ✓ साधारण पैकेजिंग

उदाहरण:

- ✓ अनाज की सफाई एवं भंडारण
- ✓ मसालों की पिसाई
- ✓ दाल मिल एवं चावल मिल

3.2 द्वितीयक प्रसंस्करण मॉडल

इस स्तर पर कच्चे उत्पादों को अर्ध-तैयार या पूर्ण रूप से तैयार उत्पादों में बदला जाता है।

उदाहरण:

- ✓ फलों से जूस, स्क्वैश, जैम
- ✓ सब्जियों से अचार एवं सूप
- ✓ दूध से विभिन्न दुग्ध उत्पाद

यह मॉडल अधिक मूल्य संवर्धन तथा बेहतर बाजार मूल्य प्रदान करता है।

3.3 किसान उत्पादक संगठन आधारित मॉडल

इस मॉडल में किसान समूह बनाकर सामूहिक रूप से उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन करते हैं।

लाभ:

- ✓ लागत में कमी
- ✓ बेहतर सौदेबाजी शक्ति
- ✓ सीधा बाजार संपर्क
- ✓ ब्रांड निर्माण में सहायता

यह मॉडल छोटे और सीमांत किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

3.4 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम आधारित मॉडल

ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में छोटे स्तर पर खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना की जाती है।

विशेषताएँ:

- ✓ स्थानीय कच्चे माल का उपयोग
- ✓ कम निवेश में अधिक रोजगार
- ✓ महिला एवं युवा उद्यमिता को बढ़ावा

3.5 कृषि-उद्योग एकीकृत मॉडल

इस मॉडल में उत्पादन, प्रसंस्करण, भंडारण, कोल्ड स्टोरेज और विपणन की सुविधाएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध होती हैं।

लाभ:

- ✓ परिवहन लागत में कमी
- ✓ मूल्य श्रृंखला का एकीकरण
- ✓ निर्यात को प्रोत्साहन

4. मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण के लाभ

- ✓ किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि
- ✓ फसलोपरांत हानियों में कमी
- ✓ ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रोजगार सृजन
- ✓ कृषि उत्पादों की गुणवत्ता एवं शेल्फ लाइफ में सुधार
- ✓ निर्यात की संभावनाओं का विस्तार
- ✓ खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को मजबूती

5. प्रमुख चुनौतियाँ

- ✓ पूंजी एवं आधुनिक तकनीक की कमी
- ✓ कोल्ड स्टोरेज एवं परिवहन अवसंरचना का अभाव
- ✓ गुणवत्ता मानकों की जटिलता
- ✓ विपणन, ब्रांडिंग एवं बाजार जानकारी की कमी
- ✓ कौशल एवं प्रशिक्षण का अभाव

6. सरकारी योजनाएँ एवं समर्थन

भारत सरकार द्वारा कृषि आधारित मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने हेतु अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं:

- ✓ प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना
- ✓ प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना
- ✓ कृषि अवसंरचना निधि
- ✓ स्टार्टअप इंडिया एवं मुद्रा योजना
- ✓ राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

ये योजनाएँ वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और बाजार संपर्क प्रदान करती हैं।

7. भविष्य की संभावनाएँ

डिजिटल मार्केटिंग, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, जैविक एवं प्राकृतिक उत्पादों की बढ़ती मांग, तथा स्टार्टअप संस्कृति के कारण कृषि आधारित मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण क्षेत्र में अपार संभावनाएँ हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता , ब्लॉकचेन, स्मार्ट पैकेजिंग एवं कोल्ड चेन विकास इस क्षेत्र को और अधिक प्रतिस्पर्धी बना सकते हैं।

8. निष्कर्ष

कृषि आधारित मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण मॉडल भारतीय कृषि को पारंपरिक उत्पादन प्रणाली से आधुनिक, लाभकारी और टिकाऊ प्रणाली की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि किसानों, उद्यमियों, शोध संस्थानों और नीति निर्माताओं के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित किया जाए, तो यह क्षेत्र "दोगुनी किसान आय", ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में निर्णायक सिद्ध हो सकता है।